1968 Contemplation of Parmeshti

Panch-Parmeshti Stotra (Anekant, 1968?)

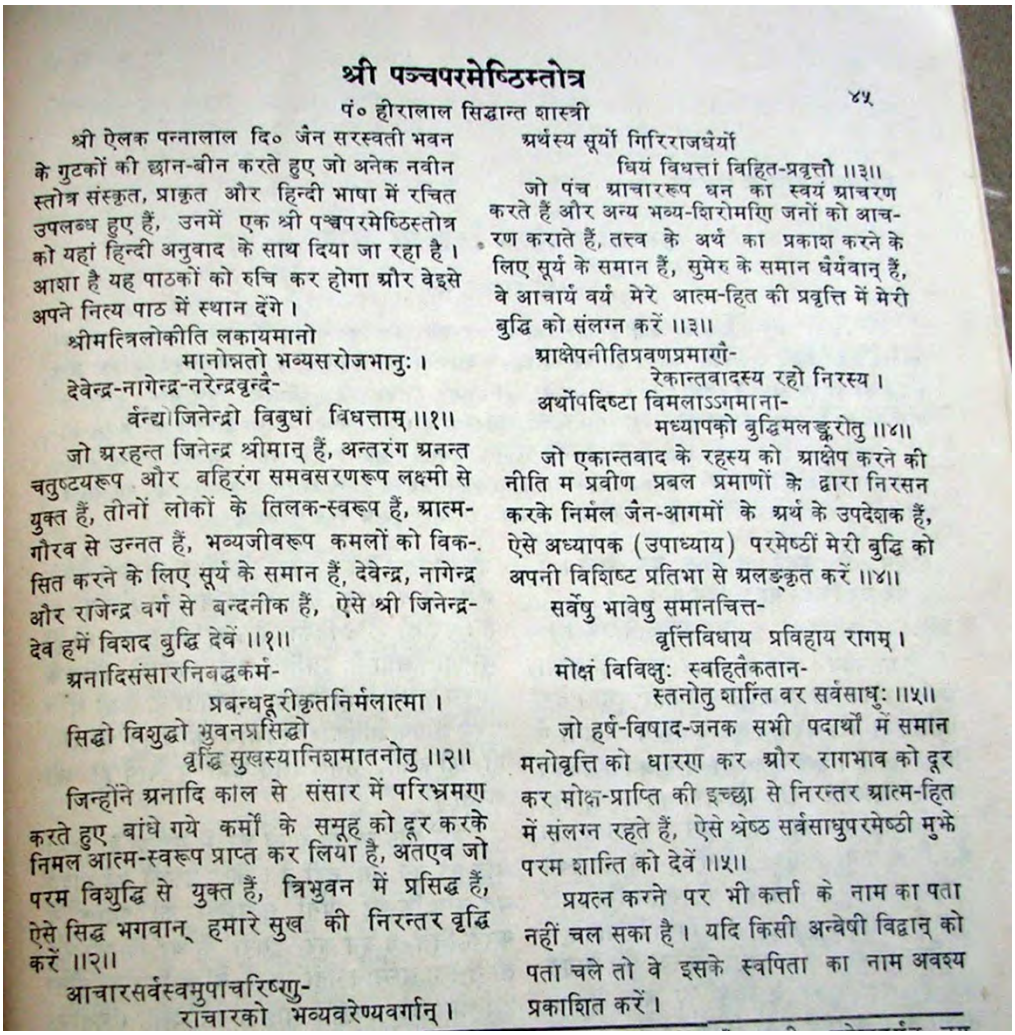

श्री पञ्चपरमेष्ठिस्तोत्र

पं० हीरालाल सिद्धान्त शास्त्री

श्री ऐलक पन्नालाल दि० जैन सरस्वती भवन के गुटकों की छान-बीन करते हुए जो अनेक नवीन स्तोत्र संस्कृत, प्राकृत और हिन्दी भाषा में रचित उपलब्ध हुए हैं, उनमें एक श्री पञ्चपरमेष्ठिस्तोत्र को यहां हिन्दी अनुवाद के साथ दिया जा रहा है। आशा है यह पाठकों को रुचि कर होगा और वेइसे अपने नित्य पाठ में स्थान देंगे।

श्रीमत्त्रिलोकीति लकायमानो
मानोन्नतो भव्यसरोजभानुः।
देवेन्द्र-नागेन्द्र-नरेन्द्रवृन्दै-
र्वन्द्योजिनेन्द्रो विबुधां विधत्ताम् ॥१॥

जो अरहन्त जिनेन्द्र श्रीमान् हैं, अन्तरंग अनन्त चतुष्टयरूप और बहिरंग समवसरणरूप लक्ष्मी से युक्त हैं, तीनों लोकों के तिलक-स्वरूप हैं, आत्म-गौरव से उन्नत हैं, भव्यजीवरूप कमलों को विक-सित करने के लिए सूर्य के समान हैं, देवेन्द्र, नागेन्द्र और राजेन्द्र वर्ग से बन्दनीक हैं, ऐसे श्री जिनेन्द्र-देव हमें विशद बुद्धि देवें ॥१॥

अनादिसंसारनिबद्धकर्म-
प्रबन्धदूरीकृतनिर्मलात्मा।
सिद्धो विशुद्धो भुवनप्रसिद्धो
वृद्धिं सुखस्यानिशमातनोतु ॥२॥

जिन्होंने अनादि काल से संसार में परिभ्रमण करते हुए बांधे गये कर्मों के समूह को दूर करके निमल आत्म-स्वरूप प्राप्त कर लिया है, अतएव जो परम विशुद्धि से युक्त हैं, त्रिभुवन में प्रसिद्ध हैं, ऐसे सिद्ध भगवान् हमारे सुख की निरन्तर वृद्धि करें ॥२॥

आचारसर्वस्वमुपाचरिष्णु-
राचारको भव्यवरेण्यवर्गान्।
अर्थस्य सूर्यो गिरिराजधैर्यो
धियं विधत्तां विहित-प्रवृत्तौ ॥३॥

जो पंच आचाररूप धन का स्वयं आचरण करते हैं और अन्य भव्य-शिरोमणि जनों को आच-रण कराते हैं, तत्त्व के अर्थ का प्रकाश करने के लिए सूर्य के समान हैं, सुमेरु के समान धैर्यवान् हैं, वे आचार्य वर्य मेरे आत्म-हित की प्रवृत्ति में मेरी बुद्धि को संलग्न करें ॥३॥

आक्षेपनीतिप्रवणप्रमाणै-
रेकान्तवादस्य रहो निरस्य।
अर्थोपदिष्टा विमलाऽऽगमाना-
मध्यापको बुद्धिमलङ्करोतु ॥४॥

जो एकान्तवाद के रहस्य को आक्षेप करने की नीति म प्रवीण प्रबल प्रमाणों के द्वारा निरसन करके निर्मल जैन-आगमों के अर्थ के उपदेशक हैं, ऐसे अध्यापक (उपाध्याय) परमेष्ठी मेरी बुद्धि को अपनी विशिष्ट प्रतिभा से अलङ्कृत करें ॥४॥

सर्वेषु भावेषु समानचित्त-
वृत्तिविधाय प्रविहाय रागम्।
मोक्षं विविक्षुः स्वहितैकतान-
स्तनोतु शान्तिं वर सर्वसाधुः ॥५॥

जो हर्ष-विषाद-जनक सभी पदार्थों में समान मनोवृत्ति को धारण कर और रागभाव को दूर कर मोक्ष-प्राप्ति की इच्छा से निरन्तर आत्म-हित में संलग्न रहते हैं, ऐसे श्रेष्ठ सर्वसाधुपरमेष्ठी मुझे परम शान्ति को देवें ॥५॥

प्रयत्न करने पर भी कर्त्ता के नाम का पता नहीं चल सका है। यदि किसी अन्वेषी विद्वान् को पता चले तो वे इसके स्वपिता का नाम अवश्य प्रकाशित करें।